हिमाचल अभी अभी

ABHI ABHI

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

सूर्य ग्रहण का प्रभाव...

-पढ़ें पेज 3 पर

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 5 अंक 40 धर्मशाला। शनिवार, 20 जून-26 जून, 2020 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 07 आषाढ़, विक्रमी संवत् 2077 कुल पृष्ठ 12 मूल्य ₹5 | Postal Regn.No. DGPUR/26/15-17

गुप्त नवरात्र

देवी भागवत के अनुसार वर्ष में चार बार नवरात्र आते हैं। जिस प्रकार नवरात्र में देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है, ठीक उसी प्रकार गुप्त नवरात्र में दस महाविद्याओं की साधना की जाती है। इस दौरान साधक मां काली, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, माता छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, मां धुमावती, मां बगलामुखी, मातंगी और कमला देवी की पूजा करते हैं। गुप्त नवरात्र तंत्र विद्या सीखने वाले और मां दुर्गा से मुंहमांगी मनोकामना करने वाले के लिए विशेष महत्व रखता है।

इस वर्ष 22 जून, 2020 से आर्द्रा नक्षत्र और सूर्य-चंद्र की उपस्थिति में नवरात्र प्रारंभ होगी। जो 29 जून 2020 भड़ली नवमी तक चलेगी। इस बार पंचमी और षष्ठी का योग रहेगा इसलिए नवरात्र का पारण 29 जून को किया जाएगा। उसके अगले दिन 23 जून को जगन्नाथ रथ यात्रा उत्सव भी मनाया जाएगा।

घट स्थापना : गुप्त नवरात्र के इन नौ दिनों में क्रम के अनुसार 22 जून को कलश सुबह 9:30 से 11 के बीच अभिजित मुहूर्त में स्थापित किया जा सकता है।

- गुप्त नवरात्र के दौरान 9 दिन के उपवास का संकल्प लेते हुए प्रतिपदा से नवमीं तक प्रतिदिन सुबह-शाम मां दुर्गा की आराधना करनी चाहिए।
- गुप्त नवरात्र में गुप्त विधि द्वारा नौ देवियों की पूजा गुप्त कार्य के लिए की जाती है।
- गुप्त नवरात्र में मानसिक पूजा की जाती है। माता की आराधना मनोकामनाओं को पूरा करती है। माता की पूजा देर रात ही की जाती है। नौ दिनों तक व्रत का संकल्प लेते हुए भक्त को प्रतिपदा के दिन घट स्थापना करना चाहिए। भक्त को सुबह शाम मां दुर्गा की पूजा करना चाहिए। अष्टमी या नवमी के दिन कन्याओं का पूजन करने के बाद व्रत का उद्यापन करना चाहिए।
- गुप्त नवरात्र विशेषकर तांत्रिक क्रियाएं, शक्ति साधना, महाकाल आदि से जुड़े लोगों के लिए विशेष महत्त्व रखती है। इस दौरान देवी भगवती के साधक बेहद कड़े नियम के साथ व्रत और साधना करते हैं। इस दौरान लोग लंबी साधना कर दुर्लभ शक्तियों की प्राप्ति करने का प्रयास करते हैं। खासकर निशा पूजा की रात्रि में तंत्र सिद्धि की जाती है। इस भक्ति और सेवा से मां प्रसन्न होकर साधकों को दुर्लभ और अतुल्य शक्ति देती हैं। साथ ही सभी मनोरथ सिद्ध करती हैं।